बाइबल की एक कहानी



आशा | उद्देश्य | जीवन

बचाव



यीशु और याईर की बेटी

विश्वास, आशा और हर परिवार के लिए यीशु के प्रेम की कहानी।



यीशु झील के किनारे लौटा

जब यीशु झील के किनारे वापस आया, तो एक बड़ी भीड़ उसका स्वागत करने के लिए इकट्ठी हो गई। सब उसके पास रहना और उसकी बातें सुनना चाहते थे।



याईर ने यीशु को खोजा

भीड़ में याईर आया, जो आराधनालय के अधिकारियों में से एक था। यीशु को पाकर वह चिन्ता से भरे मन के साथ उसके पैरों पर गिर पड़ा।



एक जरूरी विनती

याईर ने प्रार्थना की, ‘मेरी छोटी बेटी बहुत बीमार है। कृपया मेरे घर चलिए और उस पर अपने हाथ रखिए ताकि वह अच्छी हो जाए और जीवित रहे।’



यीशु उसके साथ गया

यीशु ने उसकी विनती सुनी और उसके साथ चल पड़ा। बहुत से लोग उनके साथ-साथ भीड़ बनाकर रास्ते पर चल रहे थे।



रास्ते में एक ठहराव

रास्ते में यीशु एक ऐसी स्त्री की सहायता करने के लिए रुका जो बहुत समय से बीमार थी। याईर प्रतीक्षा करता रहा और विश्वास करता रहा कि यीशु उसकी बेटी को नहीं भूला है।



बहुत दुखद समाचार

तभी याईर के घर से लोग आए और उन्होंने कहा कि उसकी बेटी की मृत्यु हो गई है। याईर के मन पर गहरा दुख छा गया।



मत डर

यीशु ने समाचार सुना, प्रेम से याईर की ओर देखा
और कहा, ‘मत डर; केवल विश्वास रख।’



याईर का घर

जब वे पहुँचे, तो परिवार और मित्र रो रहे थे। यीशु ने कहा कि लड़की मानो सो रही है और सब से शान्त रहने को कहा।



यीशु परिवार के साथ भीतर गया

यीशु लड़की के माता-पिता और अपने तीन चेलों के साथ कमरे में गया। वहाँ पूरी शान्ति छा गई।



बेटी, उठ

यीशु पास गया, लड़की का हाथ कोमलता से पकड़ा और कहा, ‘तलीथा कूमी’, जिसका अर्थ है, ‘हे लड़की, मैं तुझसे कहता हूँ, उठ।’



लड़की खड़ी हो गई

उसी क्षण लड़की ने आँखें खोलीं, उठी और चलने लगी। उसके माता-पिता उसे आनन्द और आश्चर्य से देखते रहे।



उसे कुछ खाने को दो

यीशु ने प्रेम और ध्यान से कहा कि लड़की को कुछ खाने को दिया जाए। जो घर दुख से भरा था, वह राहत और खुशी से भर गया।



आशा की कहानी

याईर ने सीखा कि सबसे कठिन घड़ी में भी वह यीशु पर भरोसा कर सकता है। यीशु हमारे दुख को समझता, हमारी प्रार्थनाएँ सुनता और हमारे साथ रहता है।